Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 12 | SPECIAL ISSUE DECEMBER-2024

बहुविषयक शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020- एक दृष्टिकोण

डॉ. अमित कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, गौतम टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज,भागन बीघा, नालंदा, बिहार.

ABSTRACT:

वैश्विक परिदृश्य में बहुविषयक शिक्षा की आवश्यकता है क्योंकि आज के समय में एक विषय या क्षेत्र के ज्ञान से संभव नहीं है। तकनीकी और सामाजिक समस्याओं रोजगार की बढ़ती आवश्यकताए कौशल विकास की आवश्यकता है। बहुविषयक पाठ्यक्रम तैयार करना शिक्षकों को प्रशिक्षित करना शोध और नवाचार को प्रोत्साहित करना चुनोतिपूर्ण है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बहुविषयक शिक्षा में एक समग्र दृष्टी दी गयी है | शिक्षकों को बहुविषयक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रशिक्षित करना आवश्यक है। शिक्षक न केवल ज्ञान के स्रोत होते हैं, बल्कि विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शक और प्रेरणा का स्रोत भी होते हैं। विषय-वस्तु, संस्थागत संसाधनों, शिक्षकों का प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम, तकनीकी साधन, बहुभाषिकता, नवाचार और उद्यमशीलता, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, जीवन कौशल, इत्यादि का समग्र शैक्षणिक विकास करना बहुविषयक शिक्षा कार्यक्रम की चुनातियां है जिसके समाधान का एक प्रयास रास्ट्रीय शिक्षा निति २०२० में किया गया है। बहुविषयक शिक्षा और संस्थागत योग्यता का भविष्य की शिक्षा व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों को केवल शैक्षणिक रूप से नहीं, बल्कि व्यावसायिक रूप से भी सशक्त बनाता है। शिक्षा में इन तत्वों का समावेश हमारे देश को एक समृद्ध,करेगा ।

KEYWORDS:

-

प्रस्तावना

बहुविषयक शिक्षा वर्तमान भारत में समन्वित शिक्षा योजना के लिए आवश्यकता है। वैश्विक परिदृश्य में बहुविषयक संकाय की स्थापना अनेको विश्वविद्यालयों में हो चुकी है ,जिसमे कई विषय एक साथ जुड़े रहते है ।रास्ट्रीय शिक्षा निति १९८६ के अध्याय ८ में पृष्ठ 11 से 14 तक में शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रिया को नया मोड़ देने की बात की गयी थी तो वही रास्ट्रीय शिक्षा निति २०२० के अध्याय ११ का मूल विषय ही रखा गया है समग्र और बहु विषयक शिक्षा की ओर।यहाँ प्रश्न यह भी बन रहा है की बहुविषयक शिक्षा कार्यक्रम की शिक्षा व्यवस्था को कारगर रूप कैसे दिया जा सकता है। इसके लिए राष्ट्रीय शीशा नीति 1986 की ओर पुनःमुड़कर देखा जा सकता है । नीति के अध्याय सात में विस्तार से दिया गया है कि यह स्पष्ट है कि शिक्षा से सम्बन्धित कोइ भी कार्य करना है तो सबसे पहले शिक्षा का प्रबध चरम बौद्धिक अनुशासन और गंभीर सोद्देश्यता होनी चाहिए । इसका आशय यह हुआ कि बहुविषयक शिक्षा कार्यक्रम का उद्देश्य भी निश्चित हो तथा पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, बालक का विकास, शिक्षक और उसकी योग्यता, अनुशासन सब कुछ निश्चित होने के साथ इस कार्यक्रम को सही रूप से सम्पादित किया जा सकता है ।

बहुविषयक शिक्षा कार्यक्रम की युक्तियाँ

बहुविषयक कार्यक्रम को सही से संचालित करने हेतु सबसे पहली युक्ति है कि-

1- अध्यापको को सही सुविधाये प्रदान की जाय- कहना न होगा कि भारत का ऐसा कोइ राज्य नहीं है जहाँ अध्यापको को सही सुविधाएँ दी जाती हो। शिक्षक भर्ती परीक्षा में सही पारदर्शिता अभी तक नहीं बन पाइ है, इसका समाधान किया जाय ।

2-विद्यार्थी आचरण या अनुशासन की समस्या का समाधान, क्योकि जब एक साथ कला और विज्ञानं के विद्यार्थी एक साथ अध्ययन करते है तो अनुशासन की समस्या आती है। इसलिए यहाँ ऐसे पाठयक्रम बनाने की चुनौती हमारी शिक्षा व्यवस्था में है कि कैसे इसको बनाया जाय। उदाहरण के तौर पार बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में या जवाहर लाल नेहरू विश्व विद्यालय में केवल प्रवेश परीक्षा संकाय के रूप में होती है, परन्तु प्रवेश के पश्चात सभी विषय एकल हो जाते है। तो ऐसे में बहुविषयक शिक्षा कार्यक्रम वास्तविक रूप से प्रतिबिम्बित नहीं हो पाया उलटे तौर पर केवल विभागवार प्रश्नों को पढ़ने वाले छात्र को प्रवेश परीक्षा पास करना दुरूह जरुर हो गया।

3- राज्य एवं रास्ट्रीय सभी स्तरों पर मूल्याङ्कन पद्धति का सृजन करना। भारत के सभी विश्वविद्यालय नए शिक्षा नीति २०२० में केवल परीक्षा केंद्र बनकर रह गए है।इसलिए समय से परीक्षा कराना और साथ ही साथ छात्रों के मूल्याङ्कन को भी एकरूप करना होगा, बहुविकल्पी पद्धति से परीक्षा करा देने से छात्र में सृजनात्मकता का विकास नहीं हो पता है,

इसलिए परीक्षा और मूल्याङ्कन दोनों की दिशा में कार्य करते हुए बहुविषयक कार्यक्रम को लागू करना चाहिए ।

बहुविषयक शिक्षा की ओर एक कदम

शिक्षा नीति २०२० में इस दिशा में एक नया कदम की ओर का आह्वान किया गया है, परन्तु कैसे यह विचारणीय प्रश्न है । शिक्षा नीति के अध्याय

11.3 में स्पस्ट रूप से दे दिया गया है की एक समग्र और बहुविषयक शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की सभी क्षमताओ –बौद्धिक, सौन्दर्य, सामाजिक, शारीरिक, भावात्मक तथा नैतिक को एकीकृत तरीके से विकसित करना है। ऐसी शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित करती है । यहाँ सर्वांगीण विकास का आशय है की हमारा बालक कला, मानविकी, भाषा, विज्ञानं, सामाजिक विज्ञानं, और व्यावसायिक, तकनिकी, सभी क्षेत्रो में विकास कर सके। २१ सदी वैसे भी साफ्ट स्किल को लेकर चलने वाली होती जा रही है। साफ्ट स्किल का मतलब है बालक सम्प्रेषण कौशल, चर्चा, वाद –विवाद जैसे कार्यो को दक्षता से कर सके। शिक्षा नीति २०२० में बार-बार अपने पुराने इतिहास का हवाला दिया गया है, यहाँ भी विश्व की चौथी औद्योगिक क्रांति की ओर आगे बढ़ने एवं वर्तमान विश्व को अगर कोए नेतृत्व दे सकता है तो वो एक भारतीय ही हो सकता है ।

बहुविषयक कार्यक्रम की पाठयक्रम योजना एक महत्वपूर्ण चुनौती भारतीय विद्वानों के समक्ष है। शिक्षा नीति २०२०के अध्याय 11.8 में एक फ्रेमवर्क दिया गया है, पांति सभी विश्वविद्यालय अपने क्षेत्रीय अनुभव के आधार पर एक सुसंगत पाठयक्रम बना सकते है जिसमे कुछ विन्दु इस प्रकार हो सकते है – क्रेडिट आधारित पाठ्यक्रम, सामुदायिक पाठ्यक्रम, पर्यावरण शिक्षा, मूल्य आधारित शिक्षा, जैव विविधता, पर्यावरण संरक्षण, वैज्ञानिक खोज, अनुसन्धान, नागरिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, वैश्विक मुद्दे, इंटर्नशिप, नागरिक शिक्षा, इत्यादि जैसे कुछ और भी क्षेत्र आपके मन में आ रहे होगें उनको भी आज के हमारे विश्वविद्यालयों की कमेटियां स्रास्तुत कर सकती है, परन्तु इन सभी की व्यावहारिक दृष्टी से सुसंगत पाठ्यक्रम बनाने की जरुरत है ।

बहु विषयक शिक्षा और शोध विश्वविद्यालय का स्वरूप कैसा होगा यह भी एक विचारणीय मुद्दा है क्योकि एक बार जब भारत के सभी विश्वविद्यालय बहुविषयक कार्यक्रम आरम्भ कर देंगे उसके बाद नए नए शोध के साथ ही नवाचार आते है, इसलिए शोध की रुपरेखा में उच्चतम मानक अपनाने की जरुरत है । इस क्षेत्र में सामाजिक अनुसन्धान केंद्र, प्रौद्योगिक अनुसन्धान केंद्र, चिकित्सीय अनुसन्धान केंद्र,व्यावसायिक अनुसन्धान केंद्र जैसे केंद्र अलग –अलग रूप में कार्य करते आ रहे है, उससे ज्यादा जरुरी है की अंतर –विषयक अनुसन्धान केंद्र स्थापित होने चाहिए । अकादमिक विषय का अलग क्षेत्र से जानकारी और प्रतिभाओं को शामिल करके कठिन विषयों और मुद्दों की अधिक व्यापक समझ प्रदान कर सकते हैं,अलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और टीमवर्क के साथ इससे एक नवाचारी संस्कृति का विकास होगा ।

<u>शिक्षण में बहुविषयक दृष्टिकोण के अनेक लाभ:-</u>

(1) सहयोग और टीमवर्क को बढ़ावा मिलेगा,

(2) समग्र शिक्षा की एक नया पक्ष आयेगा,

(3) शिक्षक एव छात्र में समस्या का समाधान की योग्यता विकसित होगी,

(4) बहुविषयक दृष्टिकोण रचनात्मकता को बढ़ाता है,

(5) व्यापक समझ विकसित होगी,

(6) आलोचनात्मक सोच विकसित होगी,

(7) शिक्षक एव छात्र दोनों में बहुमुखी दृष्टिकोण हो सकेगा,

(8) बहुविषयक शिक्षा छात्रों को उच्च शिक्षा एव शोध के लिए तैयार करता है।

(9) बहुविषयक दृष्टिकोण जटिलमुद्दों का समाधान निकाल सकता है,

(10) बहुविषयक दृष्टिकोण अकादमिक विषयों का विकास करेगा,

(11) बहुविषयक शिक्षा ज्ञान और कौशल का विकास करेगा

(12) इससे तकनीकी और सामाजिक समस्याओं का समाधान कर सकेगा,

(13) इससे रोजगार की बढ़ती आवश्यकताएँ पूरी हो सकेगी

(14) इससे कौशल विकास के साथ नवाचार को बढ़ावा मिलेगा,

(15) समग्र विकास और अनुकूलन क्षमता एव रोजगार में बढ़ावा मिलेगा।

<u>निष्कर्ष-</u>

21वीं सदी का शिक्षा क्षेत्र बहुविषयक दृष्टिकोण और संस्थागत योग्यता के लिए नए आयाम प्रस्तुत करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) ने शिक्षा में बहुविषयकता और संस्थागत योग्यता को प्राथमिकता देकर विद्यार्थियों को समग्र विकास और अनुकूलन क्षमता प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। बहुविषयक पाठ्यक्रम में एक ही विषयका अध्यन करने के लिए कई विषयों का उपयोग किया जाता है| शिक्षा में बहुविषयक दृष्टिकोण सीखने का एक तरीका है जो किसी विषय अवधारणा या किसी मुद्दे को स्पष्ट करने के लिए विविध दृष्टिकोणों को और सीखने के विभिन्न विषयों पर प्रमुख ध्यान केन्द्रित करता है यह शिक्षा का ऐसा मॉडल है जिसमें विज्ञान, कला, मानविकी, तकनीकी और व्यावसायिक विषयों को आपस में समन्वित कर पाठ्यक्रम तैयार किया जाता है। बहुविषयक पाठ्यक्रम तैयार करना शिक्षकों को प्रशिक्षित करना शोध और नवाचार को प्रोत्साहित करना चुनोतिपूर्ण है । विषय-वस्तु, संस्थागत संसाधनों, शिक्षकों का प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम, तकनीकी साधन, बहुभाषिकता, नवाचार और उद्यमशीलता, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, जीवन कौशल, इत्यादि का समग्र शैक्षणिक विकास करना बहुविषयक शिक्षा कार्यक्रम की चुनातियां है जिसके समाधान का एक प्रयास रास्ट्रीय शिक्षा निति २०२० में किया गया है। बहुविषयक कार्यक्रम को सही से संचालित करने हेतु कई युक्ति है, जिसे अपनाने की जरुरत है ।

REFERENCES

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986,भारत सरकार ,मानव संसाधन मंत्रालय, शिक्षा विभाग, अध्याय 8, पृष्ठ 11 -14
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986,भारत सरकार ,मानव संसाधन मंत्रालय, शिक्षा विभाग, अध्याय 10, पृष्ठ 1५ -16
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार ,मानव संसाधन मंत्रालय, शिक्षा विभाग, अध्याय 11, पृष्ठ 57 -60
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार,मानव संसाधन मंत्रालय, शिक्षा विभाग, अध्याय 13, पृष्ठ 64.
5. गुप्ता ,एस,पी (2020) शिक्षा नीति 2020 एक सरल परिचय, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज,

6. अस्थाना, विपिन (2014) शैक्षिक तकनिकी अनुसधान, अग्रवाल प्रकाशन, आगरा.

7. कोठारी आयोग, भारत सरकार, मानव संसाधन मंत्रालय, शिक्षा विभाग.